अध्याय – द्वितीय

(सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन)

भूमिका –

साहित्य का अवलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहें वो किसी भी क्षेत्र का है। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारम्भिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्यों कि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।

शोध साहित्य के अवलोकन का महत्वः–

1. ज्ञान के क्षेत्र मे विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधानकर्त्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहॉ पर है वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
2. पूर्व साहित्य के अवलोकन से अनुसंधानकर्त्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकें।
3. पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानो को नवीन दशाओं मे लाने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अन्य अनुसंधानकर्त्ता के द्वारा यदि वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया गया हो तो हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा।

अतः उपर्युक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि साहित्य के अवलोकन का अनुसंधान में बड़ा महत्व है।

भारत मे किये गये शोध कार्यः–

1. अग्निहोत्री, – (1979) में छोटो बच्चों मे भाषा विकास पर शोध कार्य किया। उन्होने अध्ययन किया कि भाषा विकास पर विशेषकर सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग और जन्म जाति का क्या प्रभाव पड़ता है। इन्होने इस अध्ययन के द्वारा यह पाया कि सामाजिक आर्थिक स्तर और लिंग के आधार पर उनमें भाषा विकास की दर मे कोई अंतर नहीं होता है।

2. मिश्रा, – (1982) ने अपने शोध मे छात्रो की भाषा सम्पन्नता की मात्रभाषा के शैक्षिक स्तर के संदर्भ में विश्लेषित किया और सार्थक संबंध पाया।

3. देसाई, – (1986) ने कक्षा 4 के विद्यार्थियो की भाषा योग्यता का निदान एवं उपचारात्मक शिक्षा पर एक प्रोजेक्ट लिया जिसका आधार पूर्व की कक्षाओं 1,2,3 का अधिगत स्तर था। इसमें शोधकर्त्ता ने कक्षा 3 की हिन्दी भाषा पुस्तक का विश्लेषण किया और कठिन शब्दों की एक सूची तैयार की। इसके आधार पर एक परीक्षण तैयार किया गया। न्यादर्श के रूप मे कक्षा 4 के 162 विद्यार्थियों जो अहमदाबाद मे दो नगर निगम की शालाओं एवं दो प्राइवेट शालाओ मे पढ़ रहे थे को लिया। यह निष्कर्ष पाया कि –
    1. पूर्व की कक्षाओं मे जो विद्यार्थियों ने भाषा मे सीखा उसमे अनेक दोष जैसे स्पेलिंग, मिसिंग लेटर, खराब लिखाई, गलत वाक्य आदि थे।
    2. अध्यापकों द्वारा नियमित कक्षाएँ न लेने के कारण यह दोष पैदा हुए थे साथ ही अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति रूचि न लेना था विशेष रूप से नगर निगम की शालाओं में।

लेखन योग्यता :–

आर.सी.मेहरोजा, (1974) ने हिन्दी लेखन की त्रुटियाँ का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी लेखन पर उपभाषा का भी प्रभाव पड़ता है हिन्दी में लिखित त्रुटियों का विश्लेषण जैन, (1978) ने अपने शोध मे किया। ओड, (1980) ने भी भाषा की लेखन त्रुटियों का अध्ययन किया। एम.जी.चतुर्वेदी, (1974) ने लेखन विश्लेषण पर अपना शोध कार्य किया।

एम.एड. स्तर पर हुए शोध कार्यः–

कुसुम रस्तोगी, (1969) – ने हिन्दी की अशुद्धियो का विवेचनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि – मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चे ही अधिक अच्छा कार्य करते है। अशुद्धियों के लिए उत्तरदायी तीन बातें आवश्यक पायी गई।

1. बुद्धि
2. माता–पिता का इस और ध्यान न देना
3. स्वयं बच्चों की लगन

अशुद्धियों पर संस्था एवं घर का प्रभाव पड़ता है।

मिश्रा, (1982) – ने सामाजिक शैक्षिक स्तर के संदर्भ मे प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया तथा इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि – भाषा का संरचनागत विकास सामाजिक शैक्षिक स्तर से प्रभावित नहीं होता है। मानक भाषा के दृष्टिकोण से वर्तनी त्रुटि पर माता– पिता की उच्च शिक्षा का प्रभाव चौथी कक्षा तक सार्थक रूप से पड़ता है।

बाजपेयी, (1990) – माध्यमिक स्तर पर भोपाल नगर के छात्र छात्राओं के हिन्दी उच्चारण दोष का समीक्षात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया गया है। इस अध्ययन मे यह निष्कर्ष निकला है कि छात्र छात्राओं की मात्रा संबंधी त्रुटियों मे सार्थक अंतर है। शब्द की गल्तियों, मन से पढ़े गए शब्द, जिन शब्दों को छोड़ दिया के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। भिन्न भिन्न भाषा भाषियों के कारण भी स्पष्ट ज्ञान नहीं होने के कारण उनके उच्चारण में दोष पाया गया।

कोरडर, (1975) – ने अधिगमकर्ता की त्रुटियों की अर्थवत पर महत्तवपूर्ण चर्चा प्रस्तुत की है। कोरडर का विशेषण इस महत्वपूर्ण धारणा पर अबलंबित है कि मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम में कोई मूलभूत भेद नहीं है। शिशु द्वारा मातृभाषा अधिगम की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए उन्होने लिखा है कि "मातृभाषा अधिगमकर्ता बालक से कोई भी यह अपेक्षा नहीं रखता कि वह आरंभिक स्थिति से ही उन्हीं रूपों का उत्पादन करे, जो प्रौढ़ों के अनुसार शुद्ध या अविचलित हों। हम उसके अशुद्ध वाक्यों को इस बात का प्रमाण मानते है कि वह भाषा संप्राप्ति की प्रक्रिया मे है और भाषा विकास के किसी बिन्दु पर उसके भाषा ज्ञान का विवरण प्रस्तुत करनेवाले के लिए महत्वपूर्ण प्रमाण वस्तुतः त्रुटियॉ ही जुटाती है"। बालक मातृभाषा अधिगम प्रक्रिया मे नियमों को न्यून करता है और इस प्रकार वह सरलतर भाषा के अधिगम आरंभ करता है। द्वितीय भाषा अधिगकर्ता के लिए भी यही बाते लागू होनी चाहिए।

आनन्द, (1985) – मे कक्षा 5 के छात्रो का लेखन मे प्रभाव एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का निदान दिल्ली के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों मे उपचारात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित है – वर्तनी मे गलती का कारण मुख्यता सही तरीके से न बोल पाना। अक्षरों का सही उच्चारण उम्र के बढ़ने से कोई सुधार का न होना पाया गया इसका कारण उच्चारण की सही क्षमता की जागृति पढ़ाने की कमी के द्वारा होना पाया गया ना कि उम्र का अन्तर से सबसे अधिक भूलने का कारण अक्षरों की अनुचित रूप से व्यवहार मे लाना।